ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(2): 32-36
www.allresearchjournal.com
Received: 08-12-2022
Accepted: 16-01-2023

सुरेश कुमार चौधरी
शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. दिलीप कुमार सोनी
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुरेश कुमार चौधरी
शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेश कुमार चौधरी एवं डॉ. दिलीप कुमार सोनी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं से सम्बन्धित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। तालिका में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं का स्वास्थ्य सहभागिता न करने वाले छात्र, छात्राओं के स्वास्थ्य में अंतर रहता है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है। खेल हमारे जीवन का आवश्यक हिस्सा है। स्वस्थ शरीर और दिमाग को विकसित करने के लिए खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल कई प्रकार के होते हैं, जो हमारे शारीरिक के साथ मानसिक विकास में मदद करते हैं। लगातार पढ़ाई के दौरान कई बार तनाव की स्थिति होती है। ऐसे में खेल इस तनाव को दूर करने का बेहतर माध्यम है। हमारे देश में खेलों को उतनी प्राथमिकता नहीं मिलती, जितनी शिक्षा को दी जाती है। जिस तरह दिमाग का सही विकास के लिए शिक्षा जरूरी है, उसी तरह शारीरिक विकास के लिए खेल महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा के माध्यम से हम टीम भावना नहीं सीख सकते, लेकिन खेल से यह संभव है।

कूटशब्दः अनूपपुर जिला, माध्यमिक स्तर के विद्यालय, खेल गतिविधि, सहभागिता, जनजातीय छात्र–छात्राएँ।

1. प्रस्तावना
जनजातिय संस्कृति का एक विशेष महत्व एवं पहचान है जो अन्य संस्कृतियों से बिल्कुल भिन्न है। जनजातियों मे इनके विश्वास, व्यवहार, रीति–रिवाज, परम्पराएं विधि, परम्परागत ज्ञान, कला, संगीत, नृत्य आदि कलाएं होती है। गैर आदिवासी समुदायों से इनकी संस्कृति पूर्णतः भिन्न होती है। आधुनिकता के प्रभाव ने इन्हें भी नही छोड़ा है। आजकल के आदिवासी बच्चे अपनी परम्परागत विधाओं को सीखने में कोई भी दिलचस्पी नही लेते हैं। बालक–बालिकाएं जो कि समीपस्थ नगरीय एवं कस्बाई स्कूलों में पढ़ने जाते है वे आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ आधुनिक विश्वास, व्यववहार एवं परम्पराओं को अधिक ध्यान देते है एवं उन्हे सीखने का प्रयास करते हैं अर्थात् ये अपनी संस्कृति छोड़ आधुनिक संस्कृति अपनाने लगे हैं।
जनजातियों में खेल के बहुत ही सीमित साधन होते थे। ये अपने खेलों में पत्तियॉ, पत्थर के टुकडे, विभिन्न किस्म के बीज, पुष्प, फल एवं पंखो को प्रयुक्त करते थे। इनके प्रमुख खेल लुका–छिपी, बाघ–बकरी, डोल–पाटा, कबड्डी एवं चीका है। बच्चे युवा होने पर लाशी, माला, तीर, धनुश, तलवार आदि से मनोरंजन करते थे। आधुनिकता के दौर में आने के बाद ये अब क्रिकेट, बॉलीबॉल, हॉकी रिंग, बैडमिंटन, रोप जम्प, ताश, शतरंज एवं कैरम आदि खेलते हैं। नगरीय खेलों का प्रचलन उपकरणों के अभाव में भी ग्रामीण अंचलो में देखा जाता है।
सामाजिक गतिशीलता से मोटेतौर पर हमारा आशय व्यक्ति अथवा समूह की प्रस्थिति मे परिवर्तन से होता है। प्रस्थिति का एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु मे जाना क्षैतिज अथवा ऊर्ध्वाधर हो सकता है, जो किसी क्षेत्र विशेष जैसे, शिक्षा, व्यवसाय, आय, सामाजिक शक्ति एवं सामाजिक वर्ग या इनमे से कुछ अथवा सभी क्षेत्रों मे हो सकता है। यदि परिवर्तन कुछ या सभी क्षेत्रों मे हुआ है तो संभव है कि यह किन्ही मे क्षैतिज या किन्हीं मे उदग्र हो और उदग्र मे भी गतिशीलता किन्ही क्षेत्रों मे ऊपर की ओर

और किन्ही मे नीचे की ओर हो। ऐसे मे अलग–अलग क्षेत्रों मे हुई गतिशीलता के आधार पर सामाजिक गतिशीलता के एक संयुक्त सूचकांक की गणना जरूरी हो जाती है जिसके लिए स्केल का निर्माण या गणना विधि का निरूपण गतिशीलता के परिमापन संबंधी प्रयास के अन्तर्गत रखा जा सकता है। गतिशीलता के परिमापन का आकलन स्थान अथवा काल (या पीढ़ी) अथवा सामाजिक संरचना के प्रारूप (बन्द, प्रतिबंधित अथवा खुली) के संदर्भ मे हो सकता है। इसी प्रकार गतिशीलता व्यक्ति अथवा समूह के स्वयं के प्रयास से अथवा राज्य प्रावधानों आदि से किसी एक अथवा कई कारणों से हो सकती हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता

खेल हमारे जीवन का एक अहम् हिस्सा है, यह हमारे शारीरिक एवम् मानसिक दोनो ही विकास का श्रोत है. यह हमारे शरीर के रक्त परिसंचरण मे सहायक है, वही दूसरी ओर हमारे दिमागी विकास मे लाभकारी है. खेल व्यायाम का सबसे अच्छा साधन माना जाता है. खेल ही हमारे शरीर को हस्ट–पुस्ट, गतिशील एवं स्फूर्ति प्रदान करने मे सहायक होते है। एक सफल इंसान के लिए चाहिए कि वह मानसिक तथा शारीरिक दोनो रूप से स्वस्थ रहे, मानसिक विकास की शुरुआत हमारे स्कूल के दिनो से होना प्रारंभ हो जाती है, किंतु शारीरिक विकास के लिए व्यायाम ज़रूरी है जो हमे खेलो के माध्यम से प्राप्त होता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य में सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

शोध प्रक्रिया के स्वरूप में परिकल्पना का प्रमुख स्थान है। समस्त शोध की प्रक्रियायें परिकल्पनाओं के चारों ओर केन्द्रित होती हैं। निष्कर्ष परिकल्पना की पुष्टि से ही प्राप्त होते हैं जो सिद्धांतों तथा प्रत्ययों का रूप ले लेते हैं तथा सम्बन्धित साहित्य या निष्कर्षों में सम्मिलित कर दिया जाता है। शोध प्रक्रिया निरन्तर इसी प्रकार चलती रहती है।

इससे स्पष्ट होता है कि शोध की प्रक्रिया में निरन्तरता रहती है। प्रथम परिकल्पना की पुश्टि की जाती है जिससे नये सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। द्वितीय परिकल्पना प्रथम सिद्धांत पर आधारित होती है। इसकी पुष्टि करके द्वितीय नया सिद्धांत प्रतिपादित होता है। तृतीय परिकल्पना द्वितीय सिद्धांत पर आधारित होती है। इसकी पुष्टि करके तृतीय नये सिद्धांत का प्रतिपादन होगा और चतुर्थ परिकल्पना प्रतिपादित की जा सकती है। इस प्रकार शोध की प्रक्रिया निरंतर चलती है। एक परिकल्पना दूसरी परिकल्पना को जन्म देती है और नवीन सिद्धांतों तथा नियमों का प्रतिपादन होता रहता है।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे हैं।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड – अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित हाईस्कूल व हायरसेकेण्ड्री विद्यालय इस अध्ययन के अंतर्गत शामिल होंगे। न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य व 5–5 अभिभावक कुल 200 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;द्धए ै ण्क्ए ष्जष् ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों का एकत्रीकरण अनूपपुर जिले में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, शर्मा, एन.पी. (2005)[1], पाण्डेय, के.पी., (1985)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[3], मेहता, सी. (1970)[4], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[5], सिंह, राजवीर (2010)[6], चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. (1986)[7] एवं मिलर ब्रीविंग, लॉय और रडमेन (2010)[8] ने शोध विधि एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. अनूपपुर जिले का सामान्य परिचय

मध्यप्रदेश का अनूपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति 22°07′ से 23°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°10′ से 82°10′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से अनूपपुर जिले का क्षेत्रफल 3669 वर्ग कि.मी. है। जिले के अन्तर्गत कुल तहसीलों की संख्या 04 है – पुष्पराजगढ़, अनूपपुर, जैतहरी व कोतमा है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और न करने वाले छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		सहभागिता करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राएँ	सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		34.75	20.90
मानक विचलन (SD)		7.51	8.44
क्रान्तिक निष्पत्ति (t)		24.52	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1)+(N_2-1)$
$df = (400-1) + (400-1) = 399+399 = 798$

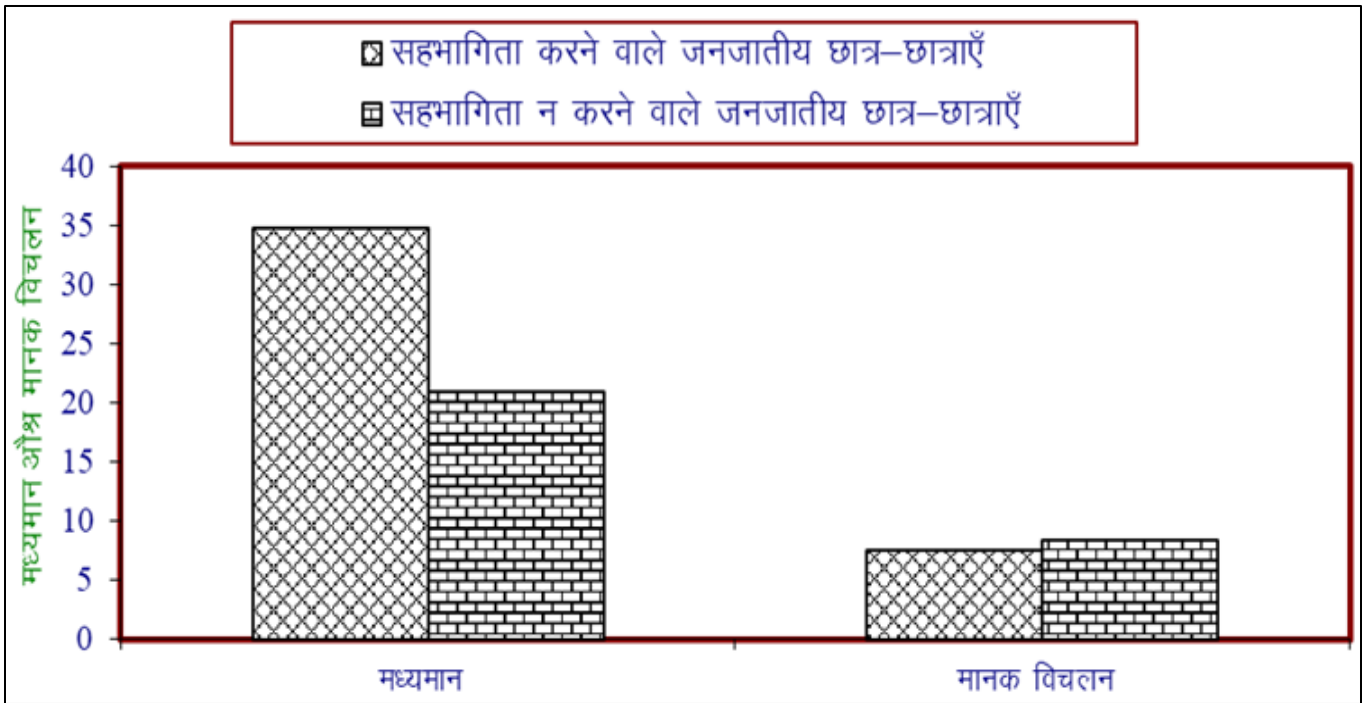

आरेख 1: माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और न करने वाले छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले और न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं से सम्बन्धित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। तालिका में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं में सार्थकता का औसत उपलब्धि 34.75 तथा मानक विचलन 7.51 है और सहभागिता न करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं में सार्थकता का औसत उपलब्धि 20.90 तथा मानक विचलन 8.44 है।

798df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.59 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 24.52 है, जो कि दोनों विश्वास स्तर के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं का स्वास्थ्य सहभागिता न करने वाले छात्र, छात्राओं के स्वास्थ्य में अंतर रहता है। यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र 1 सत्यापित होती है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है					
			हाँ		नहीं		पता नहीं	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
1.	प्राचार्य	40	37	92.50	02	5.00	01	2ण्50
2.	शिक्षक	80	76	95.00	01	1.25	03	3ण्75
3.	अभिभावक	200	160	80.00	15	7.50	25	12ण्50
4.	विद्यार्थी	800	755	94.38	25	3.12	20	2ण्50
योग		1120	1028	91.79	43	3.84	49	4ण्38
काई वर्ग (χ^2)			1722.06					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

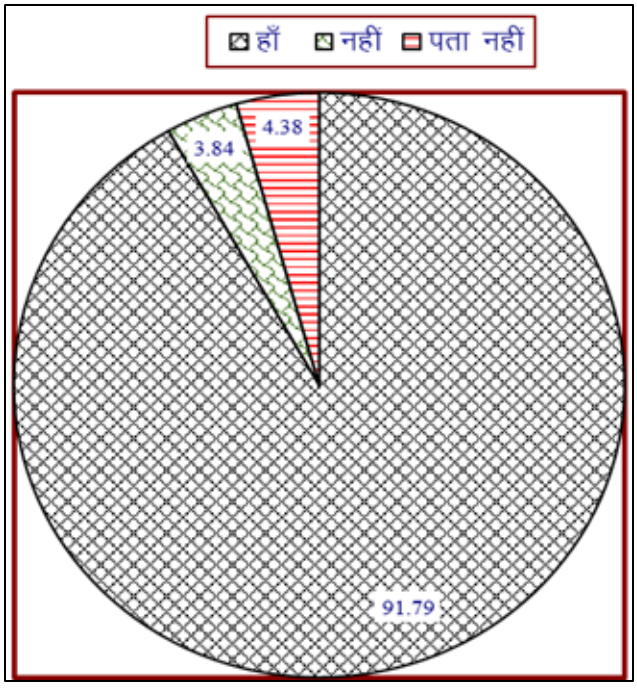

आरेख 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है का अध्ययन

12. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता की जानकारी प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक एवं छात्रों साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त की गयी है।

शोध क्षेत्र के 92.50 प्रतिशत प्रचार्य, 95.00 प्रतिशत शिक्षक, 80.00 प्रतिशत अभिभावक व 94.38 प्रतिशत छात्रों के अभिमतानुसार शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिषीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है।

शोध क्षेत्र के 91.79 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिषीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है।

शोध क्षेत्र के 3.84 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिषीलता को दृढ़ता प्रदान नहीं कर रहे है।

शोध क्षेत्र के 4.38 प्रतिशत अभिमत के अनुसार शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे के संबंध में पता नहीं है।

शोध क्षेत्र में सर्वेक्षित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता से संबंधित आंकड़ों का 'काई' वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार तीनो समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 1722.06 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिषीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है।

यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

13. निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में आयोजित खेलकूद की गतिविधियों में सहभागिता करने वाले जनजातीय छात्र–छात्राओं का स्वास्थ्य सहभागिता न करने वाले छात्र, छात्राओं के स्वास्थ्य में अंतर रहता है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पदस्थ व्यायाम शिक्षक छात्रों के लिए व्यायाम एवं खेल कूद की गतिविधियाँ आयोजित कर जनजातियों की सामाजिक गतिशीलता को दृढ़ता प्रदान कर रहे है।

अतः बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन खेलों द्वारा बालकों में त्वरित निर्णय क्षमता, वस्तुओं की जानकारी, समायोजन, समन्वय, सदभाव, साहस, सहआस्तित्व जैसे गुणों का स्वभाव में स्वतः ही विकास हो जाता है।

प्रदेश में खेल संस्कृति एवं खेलों के प्रति रूचि को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि खेलों के प्रति व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाया जाये जिससे खेलों से समाज नागरिकों पर होने वाले सकारात्मकता प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ सके। खेल के साथ मानव का मानसिक विकास संभव होता है जिससे अंकीय एवं साक्षरता जैसे कौशल में विकास होता है जिस कारण अकादमीय प्रदर्शन में सुधार दृष्टिगत होता है और विद्यालय छोड़ने की प्रवत्ति में कमी आती है खेल व्यक्तिगत प्रदर्शन को बेहतर कर मानव के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन लाते है।

14. सन्दर्भ

1. शर्मा, एन.पी. – ''खेल और समाजशास्त्र'', के.एस. पब्लिश, 2005; 55–56.
2. पाण्डेय, के.पी. – ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
3. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
4. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
5. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
6. सिंह, राजवीर – 'खेल और समाज' प्रकाशन नई दिल्ली, 2010; पेज नं. 258 से 259.
7. चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. – ''शारीरिक शिक्षा के मूलाधार'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना–दिल्ली, 1986, पृ.सं.189.
8. मिलर ब्रीविंग, लॉय और रडमेन – राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली 2010; पेज नं. 248